चालीसा काल के लिए धर्माचार्य का संदेश

प्रिय भाई-बहनों,

हम सभी वार्षिक पूजन पद्धति चालीसा काल में प्रवेश करने वाले हैं। जिसका शुभारम्भ राखबुध से होगा। बाइबिल की परम्परा में राख-तपस्या, त्याग, प्रायश्चित एवं मन-फिराने का प्रतीक माना गया है।

मन-फिराव या हृदय परिवर्तन का मतलब क्या है? इसका चित्रण जोयेल नबी प्रस्तुत करते है। बाहरी दिखावा और आडम्बर त्याग दें एवं सच्चे हृदय से अपने जीवन-शैली में परिवर्तन लायें। इसलिए नबी कहते हैं कि अपने सारे हृदय से प्रभु ईश्वर के तरफ हम लौटें। (जो. 2:12)

कहाँ से लौटने के लिए नबी बुलाते हैं? उन सब परिस्थितियों, कार्यों, विचारों एवं चीजों का परित्याग करें जो हमें ईश्वर से दूर ले गया है। संक्षिप्त में कहे तो हम अपनी जीवन-यात्रा का रुख बदल लें। सांसारिकता का परित्याग करें एवं ईश्वर के तरफ अभिमुख हो जाए।

प्रभु ईश्वर के तरफ अभिमुख होने का क्या तात्पर्य है? अपने हृदय में सच्चा पछतावा का भाव उत्पन्न करें और पिता ईश्वर के घर लौटें जैसे कि उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में प्रभु येसु ने बताया है। (Lk. 15)

अपने पिता के घर लौटने की यात्रा – पाप का प्रायश्चित, संसार एवं सांसारिक वस्तुओं से लगाव, पापानन्द का आकर्षण और झूठी स्वतंत्रता का अन्धापन का परित्याग ही इस चालीसे काल की पुकार है।

हम उस वैद्य के समक्ष अपने आध्यात्मिक रोग, चोट और हमारी बुरी आदतों का जाल जो हमें निष्क्रिय बनाता है, और भय जो हमारे जीवन-यात्रा में बाधा उत्पन्न करता है, प्रभु येसु के चरणों में आत्म-समर्पण करें ताकि प्रभु हमें स्वस्थ एवं स्वतंत्र कर दें जिससे हमें संमार्ग पर सुगमता से पिता के घर लौटे।

चालीसा काल कुछ धार्मिक कर्म-काण्ड की पूर्ति का समय नहीं, जिसमें हम कुछ दिनों के लिए दुआ-प्रार्थना, उपवास-परहेज और कुछ दया के कार्य करके त्याग-तपस्या की अवधि पूरी कर लें। बल्कि चालीसा काल आत्ममंथन करने का समय है कि हमारी जीवन-यात्रा किस दिशा में जा रही है।

इसलिए यह आवश्यक है हम विचार करें कि वह क्या है जो हमारे मन और हृदय को आकर्षित करता है? क्योंकि प्रभु येसु कहते हैं कि जहाँ तुम्हारा धन है वही तुम्हारा हृदय भी होगा। सुसमाचार हमें चेतावनी देता है कि हम अपने लिए संसार में पूँजी एकत्र न करें बल्कि अपने प्रभु ईश्वर के तरफ अभिमुख हो जाये।

चालीसा काल हमें याद दिलाता है कि प्रभु ईश्वर की तरफ अभिमुख होने के लिए प्रभु स्वयं झुककर हमसे मिलने आया है। हमारे कल्याण के लिए ईश्वर ने उन्हें पाप का भागी बनाया जिसके कारण हम ईश्वर के पवित्रता के भागी बन सकें।

जो राख हमारे माथे पर लगाया जाता है, वह संकेत करता है कि ईश्वर की तरफ लौट आने के लिए हमें विनम्रता का भाव धारण करना होगा और झुकना होगा। प्रेरित पौलुस कहते है, "हम हिम्मत छोड़ न बैठें" बल्कि धैर्य के साथ अपने पवित्रता की साक्ष्य देने में अटल बने रहें। और भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएँ जिससे हमें दया मिले।

माँ मरियम जो विनम्रता एवं सहानुभूति का आदर्श हैं, हमारे लिए मध्यस्थता करती हैं ताकि इस चालीसा के साथ हम पवित्रता एवं विश्वास में अग्रसित होते रहें और अपने विश्वासीय जीवन में अधिकाधिक फल उत्पन्न करें। आमेन।

+ यूज़ीन जोसेफ
धर्माचार्य